चमत्कार का सफ़र

उम्मीद और अद्भुत बातों की कहानियाँ।

Jesus.net

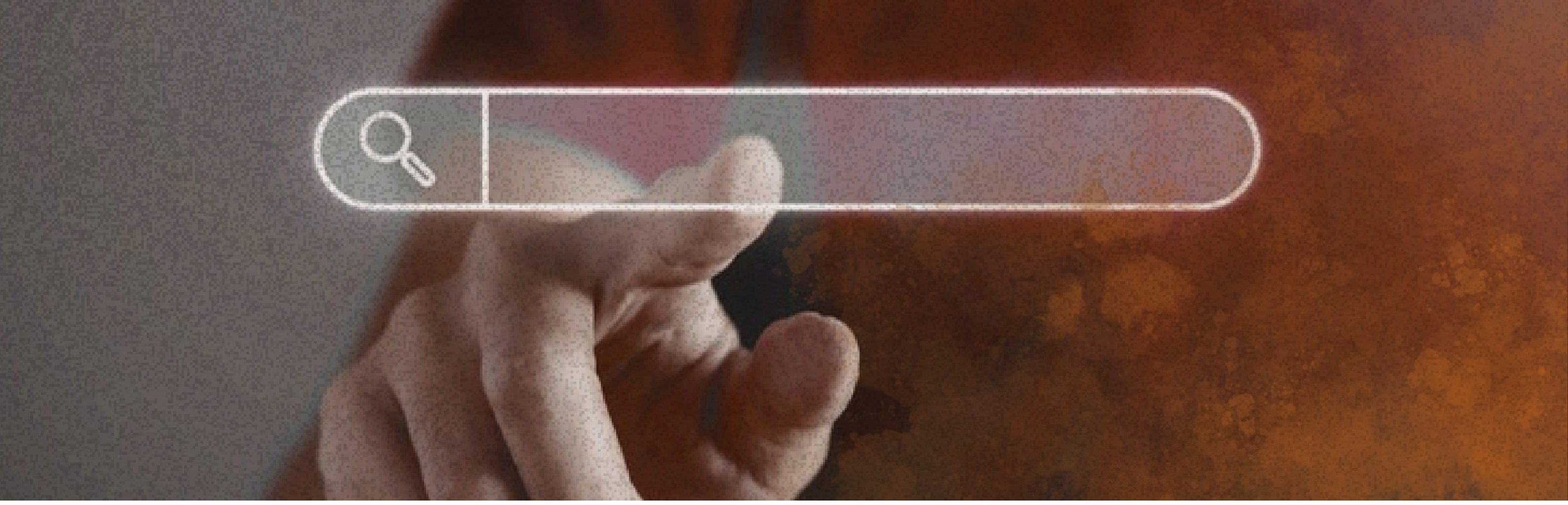

सलाम!

अगर आप इसे पढ़ रहे हैं, तो मुमकिन है कि आप **किसी अहम चीज़ की तलाश में हैं।** शायद वो **उम्मीद है**, **शिफ़ा है** या आपकी **ज़िंदगी में कोई बड़ा बदलाव।** या शायद आप जानने के लिए बेताब हैं कि क्या आज भी चमत्कार होते हैं, या क्या ख़ुदा वाक़ई मौजूद है और क्या वो आज भी उन तरीकों से काम कर रहा है जिन्हें हम देख और महसूस कर सकते हैं।

हम आपको न्योता देना चाहते हैं कि आप **ख़ुदा के अद्भुत चमत्कारों** को जानें, सिर्फ़ पुरानी कहानियों में ही नहीं, बल्कि आपकी अपनी ज़िंदगी में भी। शुरू करने के लिए, हमने आपके लिए अलग-अलग संघर्षों से जुड़ी **६ कहानियाँ** चुनी हैं, जिनमें से हर एक आपकी ज़िंदगी के लिए अहम सबक़ और गहरी सोच पेश करती है।

अगर आप किसी **चमत्कार की चाह रखते हैं** या अपनी ज़िंदगी में मतलब और शिफ़ा की तलाश में हैं, तो **आपके लिए ये जानने का एक बेहतरीन मौक़ा है** कि कैसे ख़ुदा की मोहब्बत और ताक़त आपकी ज़िंदगी तक पहुँच सकती है।

क्या आप तैयार हैं ये देखने के लिए कि ख़ुदा क्या कर सकता है?

Cameron and Jenny Mendes

कॅमरॉन और जेनी मेंडीस: चमत्कार हर दिन के लेखक

शुरुआत करने के लिए
एक छोटी सी रहनुमाई की क़िताब।

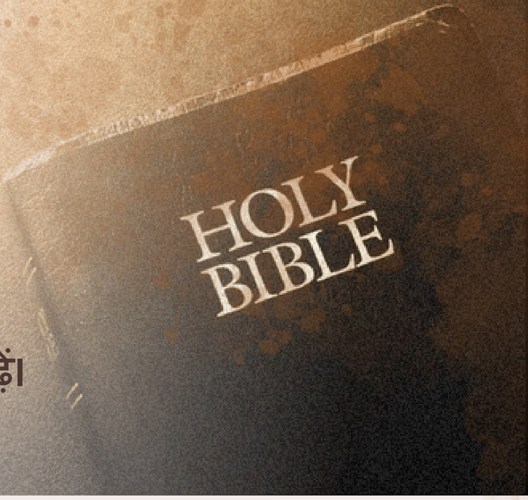

अगर आप मसीही ईमान में नए हैं, तो यह ई-गाइड ज़रूर पढ़ें।

चलिए, कुछ आसान बातों से शुरुआत करते हैं!

अगर आप इस सफ़र में नए हैं।

१ बाइबल की कहानियाँ

इस ई-गाइड में जिन चमत्कारों की हम बात करते हैं, वो बाइबल से लिए गए हैं। बाइबल, ६६ क़िताबों में लिखी गई है, जिसे ४० अलग-अलग लेखकों ने लगभग १,५०० साल के दौरान लिखा है। इसे दो बड़े हिस्सों में बाटा गया है:

पुराना नियम:
ख़ुदा और इस्राईली लोगों के बीच के रिश्ते को बयान करता है और सारे जहाँ के आग़ाज़ से लेकर यीशु मसीह के जन्म तक।

नया नियम:
यीशु मसीह की सिख और उसकी ज़िंदगी, मौत, पुनरुत्थान और शुरुआती कलीसिया पर आधारित है।

२ यीशु मसीह कौन हैं?

यीशु मसीह, मसीही ईमान की सबसे अहम शख़्सियत हैं। मसीही मानते हैं कि वह ख़ुदा की मोहब्बत दिखाने, हमें सही ज़िंदगी जीना सिखाने और मानवजाति को बचाने के लिए आया हैं।

३ बाइबल संदर्भ

इस ई-बुक में आपको बाइबल के कई संदर्भ दिखाई देंगे, जैसे 'यूहन्ना ९:३'। इसका मतलब होता है: **[बाइबल की क़िताब] [अध्याय]: [आयत संख्या]**। ये बस एक तरीका है जिससे आप बाइबल में कोई आयत को सही जगह आसानी से ढूँढ सकते हैं!

क्या आपके पास कोई सवाल हैं?

बिना किसी झिझक के हमसे संपर्क करें,
हम आपकी मदद के लिए यहाँ मौजूद हैं।
आप हमसे कोई भी सवाल पूछ सकते हैं!

१ क़र्ज़ में डूबी एक विधवा

सदियों पहले, पुराने इस्राएल में एक विधवा थी जिसके पति की मौत हो चुकी थी और उसके पास अपने दो बेटों के लिए कुछ मुहैया करने का कोई ज़रिया नहीं था।

एक दिन, जब वह अपने घर में बैठी ये सोच रही थी कि कैसे गुज़ारा किया जाएँ, तभी दरवाज़े पर कोई दस्तक देता है। दरवाज़े पर ग़ुस्से में और धमकी देता हुआ एक साहूकार खड़ा था जो अपना क़र्ज़ लेने आया था **लेकिन एक बड़ी मुश्किल थी: उस विधवा के पास कोई पैसे नहीं थे** और न ही क़र्ज़ा चुकाने का कोई तरीका। अब वह साहूकार उसके दोनों बेटों को, ग़ुलाम बनाकर ले जाना चाहता है, जब तक कि क़र्ज़ अदा न हो जाए।

अगर आप इस हालात में होते तो क्या महसूस करते? **बेबसी? डर? बेहद मायूसी?**

वह विधवा एक ऐसे आदमी की पत्नी थी जो पहले नबी एलीशा की सेवा करता था। उसके पास कुछ भी नहीं बचा था, सिर्फ़ अपने शरीर पर के कपड़े और दिल में अपने बच्चों के लिए मोहब्बत। ऐसे में वो वही करती है जो उसके बस में था: वो ख़ुदा के नबी, एलीशा, के पास मदद माँगने के लिए जाती है।

"एक दिन, नबियों के दल के एक आदमी की विधवा ने एलीशा से फ़रियाद की और कहने लगी, 'मेरा पति, जो तेरी सेवा करता था, उनकी मौत हुई हैं... लेकिन अब एक साहूकार आया है, जो मेरे दो बेटों को ग़ुलाम बनाकर ले जाने की धमकी दे रहा है।'"

२ राजा ४:१

इस मायूसी के लम्हे में, एलीशा हमदर्दी जताते हुए नज़र नहीं आता। वो न तो उसका क़र्ज़ चुकाने का वादा करता हैं, और न ही उसे उसकी बेबस हालत से तुरंत निकालने की बात करता हैं। इसके बजाय, वो उससे एक सादा सा सवाल पूछता हैं:
“तेरे घर में क्या है?”
वो विधवा जवाब देती है, “कुछ भी नहीं... सिवाय थोड़ा सा तेल के। एलीशा उसके कमी से मायूस नहीं होता बल्कि, वो उसे यह आदेश देता हैं:

> *“जाकर अपनी तमाम पड़ोसियों से खाली बर्तन मांग। लेकिन ध्यान रखें कि थोड़े बरतन न हों! फ़िर अपने बेटों के साथ घर में जाकर दरवाज़े को कुंडी लगा। तेल का अपना बर्तन लेकर तमाम ख़ाली बर्तनों में तेल उंडेलती जा। जब एक भर जाए तो उसे एक तरफ़ रखकर दूसरे को भरना शुरू कर।”* २ राजा ४:३

वह विधवा वैसा ही करती है जैसा उसे बताया गया था। उसके पास न धन था, न सहारा, न कोई स्पष्ट समाधान, सिर्फ़ थोड़ा सा तेल और एक वादा। फ़िर भी, **उसने हार मानने के बजाय ईमान में क़दम बढ़ाया।**

वह एलीशा के पास से निकलती है और अपने पड़ोसियों से खाली बर्तन इकट्ठा करने लगती है। शायद कुछ लोगों ने हैरानी से देखा होगा, कुछ ने सवाल पूछे होंगे, और कुछ ने उसका मज़ाक भी उड़ाया होगा। **लेकिन वह रुकती नहीं।** जितने बर्तन मिल सकते थे, वे ले आती है। फ़िर वह अपने बेटों के साथ घर के अंदर जाती है और दरवाज़ा बंद कर लेती है। **बाहर दुनिया की आवाज़ें थीं, लेकिन उस छोटे से कमरे के भीतर एक चमत्कार जन्म लेने वाला था।**

वह काँपते हाथों से तेल उंडेलना शुरू करती है और तभी कुछ असाधारण होने लगता है। **तेल बहता ही जाता है।** वह एक बर्तन भरती है, फ़िर दूसरा, फ़िर तीसरा। एक-एक करके सारे बर्तन भरने लगते हैं। जो तेल शुरुआत में बहुत कम दिखाई देता था, वही अब भरपूरी में बदल रहा था। आख़िरकार, जब लगभग हर बर्तन भर चुका, वह अपने बेटे से कहती है, “एक और बर्तन लाओ।” लेकिन उसका बेटा जवाब देता है, “अब एक भी बर्तन बाकी नहीं है।” और तभी तेल बहना रुक जाता है।

यह ख़ुदा की भरपूरी का प्रमाण था। जहाँ इंसान अपनी कमी देखता है, वहाँ ख़ुदा अपनी असीम सामर्थ ज़ाहिर करता है।

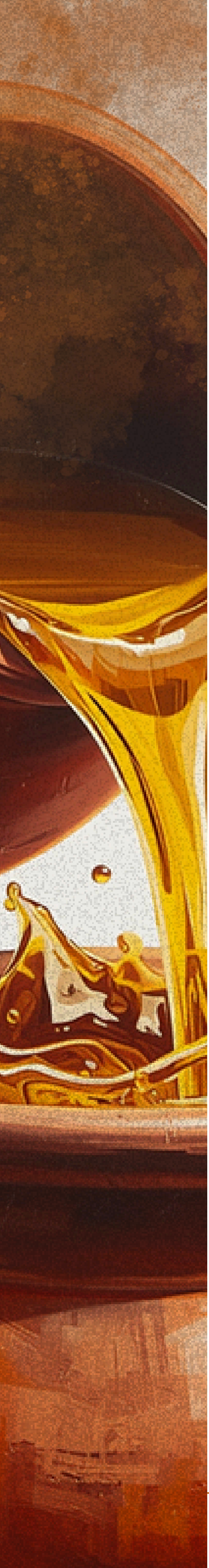

उसका चमत्कार पूरा हो जाता है। उसके बेटे बच जाते हैं। कर्ज़ अदा हो जाता है। थोड़ा सा तेल, जो बिल्कुल कुछ भी नहीं लगता था अब उसकी आज़ादी की वजह बन जाता है।

"तेरे पास क्या है?" एलीशा का ये सवाल दिल को छू लेने वाला है।

हमारी कमी पर ग़ौर करने के बजाय, ख़ुदा हमसे ये पूछता है कि हमारे पास क्या है, चाहे वो कितना ही छोटा क्यों न लगे।

अक्सर हम ज़िंदगी को कमी के नज़रिए से देखते हैं:
"मेरे पास कम पैसे है।"
"मेरे पास सही हुनर नहीं है।"
"मेरे पास वक़्त नहीं है।"
"मेरा ईमान कमज़ोर है।"

उस विधवा को नहीं पता था कि तेल कैसे बढ़ेगा। उसे ये भी नहीं पता था कि बढ़ेगा भी या नहीं। लेकिन उसकी फ़रमाबरदारी, बिना समझे भी, ख़ुदा के चमत्कार का दरवाज़ा खोल देती है।

ज़िंदगी के लिए सबक:

- ✓ **छोटे-छोटे क़दम बड़े चमत्कारों की तरफ़ ले जा सकते हैं।** विधवा का पहला क़दम कोई बड़ा क़दम नहीं था, बस कुछ हटके करने की रज़ामंदी थी।
- ✓ **हमारे पास जो कुछ भी है, ख़ुदा उसमें बढ़ोतरी कर सकता है।** ये इस बात पर आधारित नहीं है कि हमारे पास कितना है, बल्कि इस पर है कि हम कितना देने के लिए राज़ी हैं। जो आपके पास है, उसे लाएँ और ख़ुदा पर भरोसा रखें कि वो उसमें बरक़त लाएगा।
- ✓ **समाज की अहमियत होती है।** विधवा को भी अपने पड़ोसियों से मदद माँगनी पड़ी। कभी-कभी, जिन चमत्कारों की हमें ज़रूरत होती है, वो दूसरों की मदद और दरियादिली के ज़रिए मिलते हैं।

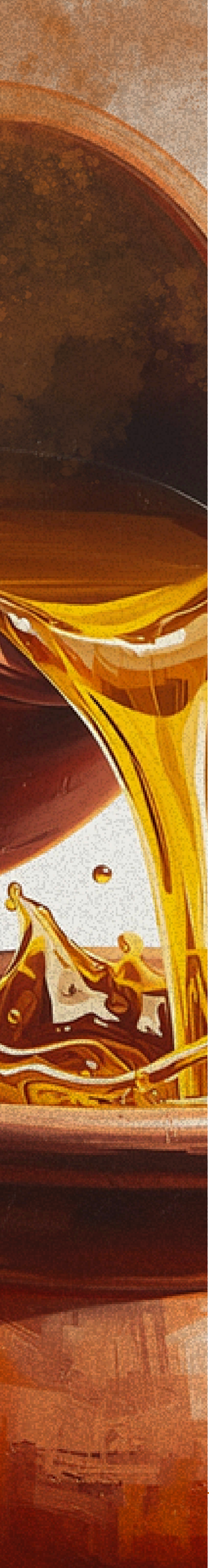

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१

आपका “तेल का बर्तन” क्या है?

आपके पास ऐसी कौन सी छोटी सी चीज़ है जो शायद आपको मामूली लगती हो, लेकिन ख़ुदा उसे बड़ी ताक़त से इस्तेमाल कर सकता है?

२

आपको किस चीज़ की कमी महसूस होती है?

क्या आपकी ज़िंदगी में ऐसे हिस्से हैं जहाँ आप अपनी कमी पर ज़्यादा ध्यान दे रहे हैं, बजाय इसके कि जो आपके पास है उसकी क़ाबिलियत को देखें?

३

आपका ईमान का अगला क़दम क्या है?

आज आप भरोसे या फ़रमाबरदारी का कौन सा छोटा क़दम उठा सकते हैं, चाहे वो मुश्क़िल ही क्यों न लगे?

?

क्या आप अपने जवाबों के बारे में किसी से बात करना चाहेंगे, वो भी मुफ़्त और जहाँ आप बिना नाम बताए बात कर सकते हैं?

हमारे ई-कोच में से किसी एक से अभी जुड़ें।

मूसा
की चमत्कारों से भरी ज़िंदगी।

मूसा की ज़िंदगी चमत्कारों से भरी हुई थी। वह यहूदी और मसीही, दोनों में एक अहम शख़्सियत था। जब आप उस वक़्त के सिलसिलों को देखेंगे, तब आप जानेंगे कि उसकी ज़िंदगी के सफ़र में कैसे नामुमकिन बातें, मुमकिन बनती गईं, जो उम्मीद और नई शुरुआत लेकर आईं।

बचपन में मूसा की हिफ़ाज़त

मिस्र में फ़िरौन के उस हुकुम से, जिसमें सारे इब्रानी नवजात लड़कों को मार डालने का फ़रमान था, मूसा को बचा लिया गया (निर्गमन २)।

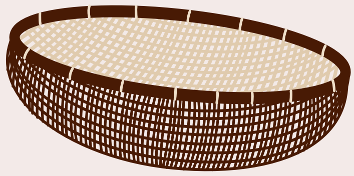

जलती हुई झाड़ी से रूबरू

जिस जगह मूसा एक ऐसी झाड़ी से रूबरू होता है जो आग से तो जल रही थी, लेकिन भस्म नहीं हो रही थी, उसी जगह ख़ुदा ने उसे, इस्राएलियों को मिस्र की ग़ुलामी से आज़ाद करने के लिए बुलाया था। (निर्गमन ३)

दस महामारियाँ

ख़ुदा, मिस्र पर दस महामारियाँ भेजता है, जिससे फ़िरौन और मिस्री देवताओं पर उसकी ताक़त और उसका इंसाफ़ ज़ाहिर होता है। (निर्गमन ७–१२)

मूसा की कहानी देखें।

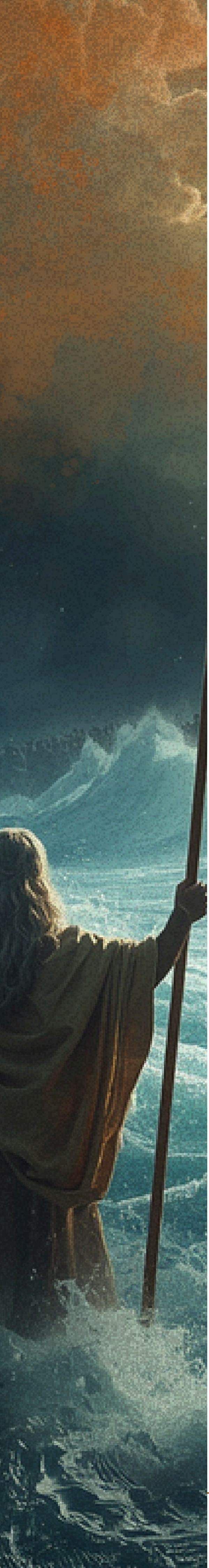

२ लाल समुंदर का दो हिस्सों में बट जाना।

इस्राएली लोग कई सदियों से मिस्र में रह रहे थे। सैकड़ों सालों तक वे फ़िरौन के राज में ग़ुलामी में **काम करते रहे,** उनके जिस्म थक चुके थे और उनके दिल टूट चुके थे।

फ़िर भी, इस सब के बीच, **ख़ुदा ने उनकी फ़रियाद सुनी और उनका दुःख-दर्द देखा।** और उसने मूसा को बुलाया कि वह उन्हें ग़ुलामी से आज़ाद करे और **उन्हें एक ऐसी ज़मीन देने का वादा किया जो उनकी अपनी हो।**

> ***तब ख़ुदा ने मूसा से कहा, "मैंने मिस्र में अपने लोगों की बुरी हालत देखी है और ग़ुलामी में उनकी चीख़ें सुनी हैं और मैं उनके दुखों को ख़ूब जानता हूँ।'"***
>
> **निर्गमन ३:७**

आख़िरकार, कई महामारियों के बाद उन्होंने पूरे मिस्र को हिला कर रख दिया और फ़िरौन ने इस्राएलियों को जाने की इजाज़त दे दी। थके हुए लेकिन उम्मीद से भरे इस्राएली, रेगिस्तान की ओर अपने सफ़र पर निकल पड़े। **लेकिन उनकी ख़ुशी फ़ौरन ख़ौफ़ में बदल गई।**

फ़िरौन ने अपना इरादा बदल दिया। वह अपने ग़ुलामों को इतनी आसानी से जाने नहीं देना चाहता था, इसलिए उसने, उनका रेगिस्तान में पीछा करने के लिए, अपनी फ़ौज को इकट्ठा किया।

जब घोड़ों की टापों और रथों की आवाज़ तेज़ होती गई, तब इस्राएली लाल समुंदर के किनारे पहुँच गए, जो एक अज़ीम और पार न किया जाने वाला समुंदर था। वे अजीब तरीक़े से फँस गए थे। **न आगे जाने का रास्ता था** न कहीं भागने की जगह।

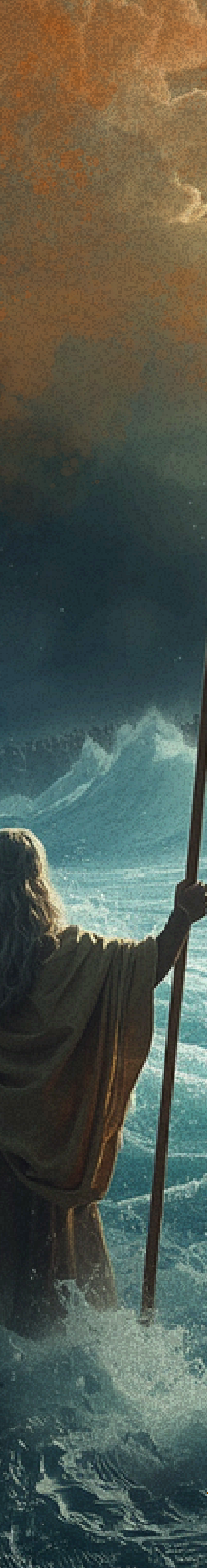

डर ने इस्राएलियों को घेर लिया और घबराहट फ़ैल गई थी। वे फँस गए थे, अब कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था और इसी नाउम्मीदी के पल में उन्होंने अपने अगुआ, मूसा की ओर देखा और उस पर इल्ज़ाम लगाया:

> ***"क्या मिस्र में क़ब्रों की कमी थी कि तू हमें रेगिस्तान में लेकर आया हैं? हमें मिस्र से निकालकर तूने हमारे साथ क्या किया है?"***
> **निर्गमन १४:११-१२**

उनकी आवाज़ें बे-यक़ीनी से भरी हुई थीं। **उन्होंने ख़ुदा और मूसा पर भरोसा तो किया था, लेकिन अब वे बिल्कुल तबाही के कगार पर आ पहुँचे थे।** समुंदर और फ़ौज के बीच फँसकर, क्या वे यहाँ रेगिस्तान में ही मर जाएंगे?

समुंदर का दो हिस्सों में बट जाना।
लेकिन ख़ुदा ने उन्हें इतने दूर लाकर असफ़ल होने के लिए नहीं छोड़ा था। उसने मूसा से कहा कि वह अपनी छड़ी समुंदर पर फ़ैलाए (निर्गमन १४:१६)।

मूसा ने ख़ुदा की आज्ञा मानकर, अपनी छड़ी फ़ैलाई और **लाल समुंदर का पानी दो हिस्सों में बट गया।** बीच में सुखा रास्ता बन गया और दोनों तरफ़ पानी की ऊँची दीवारें खड़ी हो गईं।

हैरानी में काँपते हुए, इस्राएली लोगों ने उस अद्भुत चमत्कार में क़दम रखा। **वे ख़ुदा की ज़बरदस्त ताक़त** से घिरे हुए, समुंदर के बीचों-बीच सूखी ज़मीन पर चल पड़े।

यह देखकर, मिस्री फ़ौज भी उनका पीछा करने लगी लेकिन अफ़सोस कि उसी पल, ख़ुदा ने दोनों तरफ़ से पानी के दीवारों को उन पर गिराकर उनके लिए रास्ता बंद कर दिया और इस्राएल के लोगों को बचा लिया। ख़तरा मिट चुका था और **अब वे पूरी तरह से आज़ाद हो गए थे।**

मूसा की कहानी यहाँ देखें

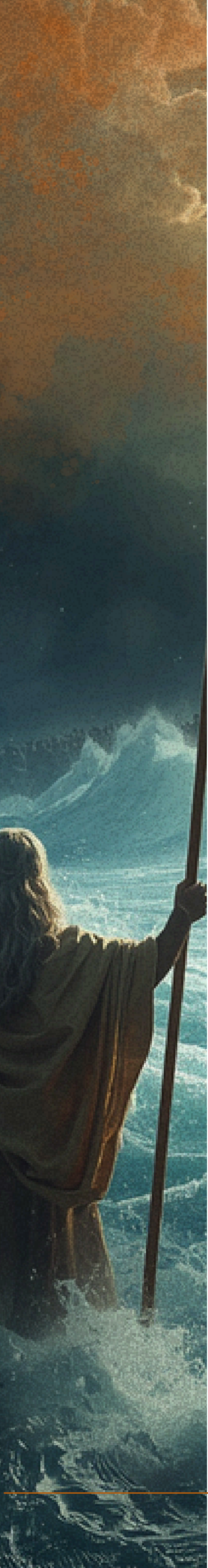

ज़िंदगी के लिए सबक़:

- **नामुमक़िन पर भरोसा रखें।** कभी-कभी, ख़ुदा हमसे आगे बढ़ने के लिए कहता हैं, भले ही आगे का रास्ता नामुमक़िन सा क्यों न लगे।
- **जब कोई रास्ता नज़र न आए, फ़िर भी ख़ुदा रास्ता बना सकता हैं।**
- **फ़रमाबरदारी चमत्कारों के दरवाज़े खोलती है।** इस्राएलियों को क़दम उठाना पड़ा। वे सिर्फ़ वहीं खड़े रहकर उम्मीद नहीं कर सकते थे। चमत्कार कभी-कभी तब तक नज़र नहीं आते, जब तक हम आगे नहीं बढ़ते।
- **ख़ुदा हमारी फ़िक्र करता है और हमें बचाता है।** लाल समुंदर का दो हिस्सों में बट जाना यह ज़ाहिर करता है कि ख़ुदा हमारे ग़मों को देखता है, हमारी फ़रियाद सुनता है और भले ही हमें आगे का रास्ता नज़र न आए, हमें आज़ादी दिलाने के लिए काम करता है।

सवाल:

१ **आपके लिए "लाल समुंदर" का मतलब क्या है?**
क्या आपकी ज़िंदगी में ऐसे हालात हैं जहाँ आप फँसे हुए, मायुस या नामुमक़िन मुश्किलों से घिरे हुए महसूस करते हैं?

२ **आपको किन चीज़ के लिए ईमान की ज़रूरत है?**
कहाँ आपको भरोसा करने की ज़रूरत है कि ख़ुदा रास्ता बनाएगा, भले ही अभी यह नामुमक़िन ही क्यों न लगे?

चमत्कार यहाँ ख़त्म नहीं होते। ख़ुदा अपने लोगों का ख़याल रखता हैं। वह चमत्कारी तरीकों से यह ज़ाहिर करता हैं कि वह हमारी फ़िक्र करता हैं:

कड़वा पानी का मीठे पानी में बदल जाना।

लाल समुंदर पार करने के बाद, इस्राएली बेहद प्यासे थे। लेकिन पानी कड़वा और पीने लायक नहीं था। मूसा ने पानी में लकड़ी फेंकी और पानी पीने लायक हो गया। (निर्गमन १५:२५)

आसमान से रोटी और मांस का इंतज़ाम।

रेगिस्तान में इस्राएली भूख की शिकायत करते हैं और ख़ुदा हर सुबह आसमान से मन्ना भेजता हैं, जो रोटी जैसा पदार्थ होता है। (निर्गमन १६)

चट्टान से पानी

जब इस्राएली अपनी प्यास की शिकायत करते हैं, मूसा अपनी छड़ी से चट्टान पर प्रहार करता है और चमत्कारी तरीके से चट्टान से पानी निकलता है। (निर्गमन १७)

पानी को दाखरस में बदलना

ख़ुदा का इंतज़ाम महज़ मूसा और इस्राएलियों की कहानियों में ही नहीं दिखाई देता। कई सालों बाद, यीशु मसीह शादी के दौरान पानी को दाखरस में बदल देता हैं।

इसे द चोज़न (सीज़न १, एपिसोड ५) में देखें।

चमत्कार हर दिन।

आज ही अपनी ज़िंदगी में ख़ुदा के चमत्कार की ताक़त देखें। रोज़ाना चमत्कार के प्रोस्ताहन पाने के लिए अभी सब्सक्राइब करें:
jesus.net/miracle

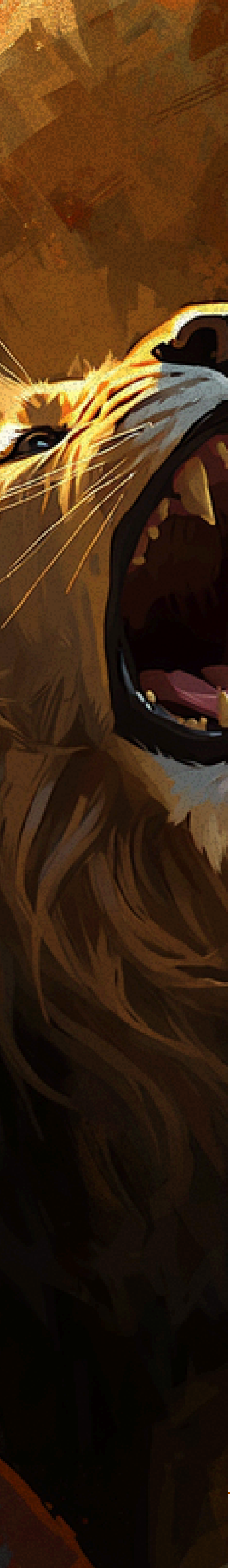

३ शेरों की गुफ़ा में दानिय्येल।

दानिय्येल (६२०–५३८ ईसा पूर्व), एक ऐसा इंसान था, जो अपनी पूरी ज़िंदगी ईमानदारी और ज्ञान के साथ दूसरों की सेवा करता था और अपने आस-पास के लोगों का भरोसा जीत लेता था। वह फ़ारस के राजा का एक **इज़्ज़तदार सलाहकार** था, जो अपने **ज्ञान**, **वफ़ादारी** और **बेमिसाल ईमानदारी** के लिए मशहूर था। उसका काम अव्वल था और राजा उसकी बहुत इज़्ज़त करता था।

यह देखकर, राजा के दूसरे अफ़सर, दानिय्येल से जलने लगे। उन्होंने उसके काम करने के तरीक़े में कई ग़लतियाँ ढूँढने की क़ोशिश की, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। **दानिय्येल भरोसेमंद था।** वह बिना किसी रिश्वतखोरी या ग़लती के, पूरी ईमानदारी से अपना काम करता था। **तब उन्हें एहसास हुआ कि वे दानिय्येल पर कोई इल्ज़ाम नहीं लगा सकते थे, सिवाय उसके ईमान के मामले में।**

वे जानते थे कि दानिय्येल अपने ख़ुदा के प्रति वफ़ादार था। इसलिए **उन्होंने उसके ख़िलाफ़ एक सोची-समझी साज़िश रची।** उन्होंने ऐसा क़ानून जारी करवाया कि राजा के अलावा, कोई भी किसी और से दुआ या विनती नहीं करेगा, और जो इसका उल्लंघन करेगा, उसे भूखे शेरों की माँद में फेंक दिया जाएगा। यह दानिय्येल को फँसाने की एक चालाक योजना थी। उन्हें पूरा यक़ीन था कि दानिय्येल अपने ख़ुदा के सिवा, किसी और के आगे नहीं झुकेगा, और इसी वजह वह उनके बनाए हुए क़ानून का दोषी ठहराया जाएगा। फ़िर भी, दानिय्येल ने पीछे हटने या समझौता करने से इनकार कर दिया।

“जब दानिय्येल को मालूम हुआ कि फ़रमान जारी हुआ है तो वह सीधा अपने घर के उपरी कमरे में चला गया। जिसकी खुली खिड़कियों का रुख़ यरूशलेम की तरफ़ था। इस कमरे में दानिय्येल रोज़ाना तीन बार अपने घुटनों पर आकर दुआ और अपने ख़ुदा का शुक्रिया अदा करता था। अब भी उसने यह सिलसिला जारी रखा था।”

दानियल ६:१०

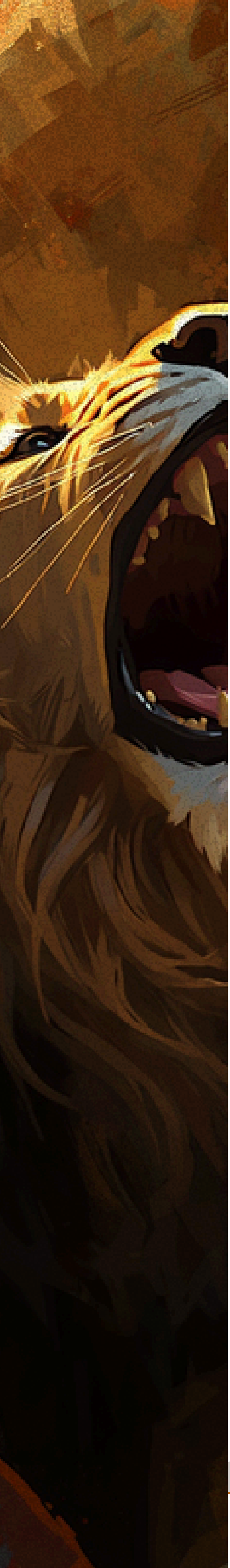

दानिय्येल का हौसला क़ाबिल-ए-ग़ौर था। उसने फ़ैसला किया कि वह उसी एक बात के प्रति **वफ़ादार रहेगा** जिसने हमेशा उसकी रहनुमाई की थी: उसका, ख़ुदा के साथ रिश्ता। **हालात चाहे जैसे भी हों,** वह ख़ुद को बदलता नहीं।

अफ़सर, दानिय्येल को **दुआ करते हुए पकड़ लेते हैं** और राजा को उसका क़ानून याद दिलाते हैं, कि जो कोई भी राजा के सिवा किसी और से दुआ करेगा, उसे शेरों की गुफ़ा में डाल दिया जाएगा। राजा परेशान होता है और दानिय्येल को बचाने का रास्ता ढूँढने की कोशिश करता है, लेकिन वह क़ामयाब नहीं होता हैं। आख़िरकार, वह हुक़्म देता है कि दानिय्येल को शेरों की गुफ़ा में डाल दिया जाए और **उम्मीद करता है कि दानिय्येल का ख़ुदा उसे बचा लेगा।** गुफ़ा का मुंह एक पत्थर से बंद कर दिया जाता है, ताकि दानिय्येल की क़िस्मत बदली न जा सके।

दानिय्येल पूरी रात शेरों के बीच बिताता है, एक ऐसी हालत जो बिल्कुल बेउम्मीद लगती है। फ़िर भी, **दानिय्येल को कोई नुक़सान नहीं होता हैं।** अगली सुबह, राजा दानिय्येल को ज़िंदा पाता है:

"मेरे ख़ुदा ने अपने फ़रिश्ते को भेज दिया जिसने शेरों के मुँह को बंद रखा। उन्होंने मुझे कोई भी नुक़सान न पहुँचाया, क्योंकि ख़ुदा के सामने मैं बेक़ुसूर हूँ। राजा, मैंने तेरे ख़िलाफ़ भी कोई ग़लती नहीं की हैं।"

दानिय्येल ६:२२

ज़िंदगी के लिए सबक:

- ✓ **ईमान के लिए अक्सर हिम्मत की ज़रूरत होती है।** कभी-कभी चमत्कार तब होते हैं जब हम दबाव के बावजूद उस बात पर डटे रहते हैं जिसे हम सही जानते हैं।
- ✓ **ख़ुदा की हिफ़ाज़त हक़ीक़ी है।** सबसे नामुमकिन हालात में भी उम्मीद मुमक़िन है।
- ✓ **ईमानदारी मायने रखती है।** दानिय्येल का, सच्चाई और वफ़ादारी से जीने का, पक्का इरादा उसे चमत्कार देखने की जगह ले आता हैं।
- ✓ **फ़रमाबरदारी के ज़रिए गवाही देना।** दानिय्येल का मज़बूत ईमान न सिर्फ़ उसे बचाता है, बल्कि राजा और दूसरों को भी ख़ुदा की ताक़त पहचानने के लिए हिम्मत देता है।

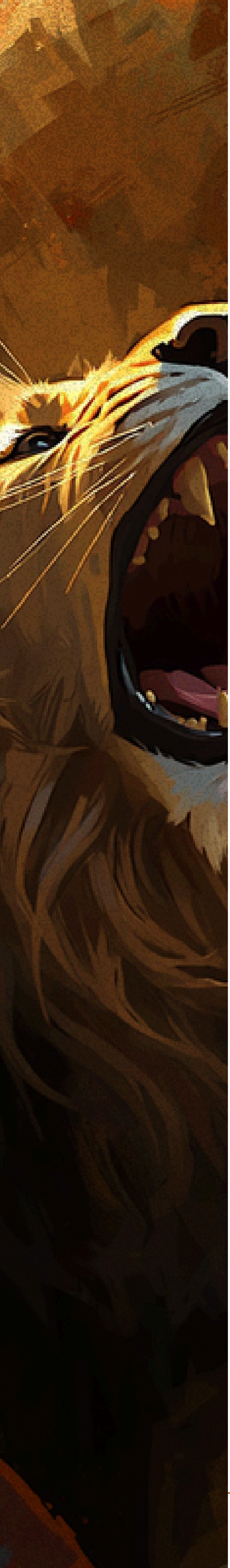

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१

आप किस बात के लिए खड़े हैं?

आपकी ज़िंदगी में ऐसे कौन से उसूल, यक़ीन या पहलू हैं जिनके लिए आप हर क़ीमत पर डटे रहना चाहते हैं?

२

आप किन “शेरों” का मुक़ाबला कर रहे हैं?

क्या आप किसी ऐसी मुश्किल, डर या दबाव का सामना कर रहे हैं जो नामुमकिन लगता है?

३

आपका ईमान का अगला क़दम क्या है?

आज आप हिम्मत का कौन सा क़दम उठा सकते हैं, चाहे उसका नतीजा ग़ैर-यक़ीनी या ख़तरनाक ही क्यों न हो?

अगर आप चाहें कि हम आपके लिए दुआ करें, तो बेझिझक अपनी दुआ की गुज़ारिश यहाँ लिखें।

हमारा चमत्कार का सफ़र...

जब हमारा बेटा, ज़ैक, महज़ १० महीने का था, तब वह एक गंभीर दिमाग़ी संक्रमण का शिकार हुआ था। उस बीमारी ने उसके दिमाग़ को गहरा नुक़सान पहुँचाया था और वह अपने दम पर साँस नहीं ले सकता था, न खा सकता था, न चल सकता था, न बोल सकता था, और न ही चैन से सो पाता था।
४ लंबे सालों तक हमने आँसुओं, उम्मीद और यक़ीन के साथ लगातार ख़ुदा से अपने बेटे की चंगाई के लिए दुआ की। लेकिन अंततः मार्च २०२५ में, ज़ैक इस दुनिया को छोड़कर चला गया।

हम जानते हैं कि किसी चमत्कार की गहरी ज़रूरत में होना कैसा लगता है।

हालाँकि ज़ैक को वह शारीरिक चंगाई नहीं मिली, फ़िर भी इस पूरे सफ़र में हमने ख़ुदा के अनगिनत छोटे-बड़े चमत्कार देखे। जब अस्पताल के भारी-भरकम बिल पहाड़ की तरह खड़े थे, तब ख़ुदा ने ऐसे रास्ते बनाए कि वे समय पर चुकाए जा सके। उसने हमारे लिए दुनिया के बेहतरीन बच्चों के अस्पतालों में से एक के पास रहने का प्रबंध किया था। और जब जब हमें सही डॉक्टर, नर्स या थेरेपिस्ट की ज़रूरत पड़ी, उसने अद्भुत रीति से हर ज़रुरत पूरी की।

लेकिन इन सबसे बढ़कर, **ज़ैक को सबसे अज़ीम चमत्कार मिला: आसमान के उस पार, यीशु मसीह के साथ अब्दी ज़िंदगी।**
सुसमाचार का चमत्कार यही है: कि **यीशु मसीह ने हमारे लिए अपनी जान क़ुर्बान कर दी, ताकि हम फ़रावाँ और अब्दी ज़िंदगी पा सकें** (यूहन्ना ३:१६)।

और यह ज़िंदगी... आज आपके लिए भी उपलब्ध है।

अगर हमारे साथ खड़े रहने वाले लोगों का सहारा न होता, तो शायद हम अपने बेटे की बीमारी और उसे खोने के इस गहरे दर्द से कभी गुज़र नहीं पाते।

हमने अपनी ज़िंदगी में हर दिन मिलने वाली हौसला-अफ़ज़ाई, दुआओं की ताक़त को बेहद क़रीब से महसूस किया है।

अब हमारी बारी है कि हम इस सफ़र में आपके साथ चलें, क़दम-दर-क़दम और हर दिन आपको यीशु मसीह के और क़रीब ले जाएँ।

हम यह, **'चमत्कार हर दिन'** के ज़रिए रोज़ाना करते हैं।

हमारे रोज़ाना चमत्कार के प्रोत्साहन पाने के लिए सबस्क्राइब करें।

४ जन्म से अंधा इंसान।

एक आदमी जन्म से अंधा था। उसने कभी इस दुनिया की रोशनी नहीं देखी थी और अपनी पूरी ज़िंदगी अंधेरे में गुज़ारी थी। हर दिन वह सड़क के किनारे बैठकर भीख माँगता था।
ज़रा सोचिए: सालों तक लोगों की आवाज़ें सुनना, उनके क़दमों की आहट महसूस करना, लेकिन ख़ुद हमेशा अनदेखा रह जाना। पूरे दिन लोगों द्वारा नज़रअंदाज़ किए जाने का दर्द उसने कितनी गहराई से महसूस किया होगा।

लेकिन फ़िर, **यीशु मसीह वहाँ आता है** और वह उसे देखता है। महज़ एक अंधे आदमी के तौर पर नहीं, बल्कि एक ज़िंदा इंसान की तरह। वह उसका दर्द, उसकी ज़रूरत और क़ाबिलियत देखता है। यीशु मसीह, उसे रहम और एक नई उम्मीद के साथ देखता है।
लेकिन यीशु मसीह के चेलें, यीशु मसीह से एक अजीब सा सवाल पूछते हैं:
"रब्बी, किसने गुनाह किया, इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने, कि यह अंधा पैदा हुआ?" यूहन्ना ९:३

उन चेलों की तरह, आज भी हम मुश्किल हालातों में ऐसे ही अजीब से सवाल पुँछते हैं: *"क्या हुआ? क्यों हुआ? यह किस ग़लती की सज़ा है?"*

लेकिन **इस इल्ज़ाम लगाने वाले रवैये को साफ़ तौर पर ख़ारिज करके, यीशु मसीह एक गहरी सच्चाई की ओर इशारा करता हैं और चेलों से कहता हैं...**

> ***"न इसका कोई गुनाह है और न ही इसके माता-पिता का। यह अंधा इसलिए हुआ ताकि इसकी ज़िंदगी में ख़ुदा का काम ज़ाहिर हो सके।"***
>
> **यूहन्ना ९:३**

कभी-कभी जिन चीज़ों को हम अपनी पहचान मान बैठते हैं; हमारा दर्द, हमारी टूटन, हमारी कमज़ोरियाँ और सीमाएँ, असल में वही जगहें होती हैं जहाँ ख़ुदा अपने सबसे बड़े चमत्कार ज़ाहिर करता है। **जो बात किसी की ज़िंदगी में बदक़िस्मती, हार, या कभी न बदलने वाली हक़ीक़त लगती है, वही ख़ुदा के हाथों एक अद्भुत गवाही और चमत्कार की शुरुआत बन सकती है।**

और फ़िर, जहाँ यीशु मसीह उस अंधे इंसान को सिर्फ़ एक ही लफ़्ज़ कहकर शिफ़ा दे सकता था, जैसे 'चंगा हो जा!', उसने कुछ बिल्कुल अप्रत्याशित किया।

***'उसने ज़मीन पर थूका, लार और मिट्टी मिलाकर उस मिट्टी को अंधे आदमी की आँखों पर लगा दिया।'* - यूहन्ना ९:६**

शिफ़ा देने का और अद्भुत चमत्कार दिखाने का तरीक़ा थोड़ा अलग था। फ़िर भी, यीशु मसीह उससे कहता हैं कि वह उस पर भरोसा करे और उसे सिलोह के कुंड में जाकर धोने के लिए कहता हैं।

वह सवाल कर सकता था, शक़ कर सकता था, या वहीं रुक सकता था। लेकिन उस अजीब तरीक़े के बावजूद, फ़रमाबरदारी जताता है और जैसे ही वह अपनी आँखों से मिट्टी धोता है, उसकी नज़र वापस आ जाती है। अपनी ज़िंदगी में पहली बार, वह इस दुनिया को उसके रंगों और ख़ूबसूरती में देख पाता है।

हमें अपनी नाउम्मीदों को छोड़ कर दिल से ये यक़ीन रखना होगा कि ज़िंदगी की हर उलझन में भी, ख़ुदा बदलाव ला सकता हैं।

इस अद्भुत कहानी को यहाँ देखें।

ज़िंदगी के लिए सबक:

- ✓ **अतीत नहीं, क़ाबिलियत को देखें।**
  ख़ुदा लोगों के अतीत से आगे देखकर, चमत्कारों की उम्मीद देखता हैं।
  हम भी ऐसा कर सकते है।
- ✓ **चमत्कार अचानक से होते हैं।**
  बदलाव अक्सर उन तरीक़ों से आता है जिन्हें हम समझ नहीं पाते।
- ✓ **ख़ुदा, आपकी उलझन भरी शिफ़ा से डरता नहीं हैं।**
- ✓ जिसे हम अपनी **सबसे बड़ी कमी समझते हैं**, वही हमारी **सबसे बड़ें बदलाव की वजह बन सकती है।**
- ✓ **फ़रमाबरदारी ज़रूरी है।**
  उस आदमी को बदलाव देखने से पहले, क़दम उठाना पड़ा।

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ कौन से क्षेत्र में आप चंगाई चाहते है?

क्या आपकी ज़िंदगी में ऐसे पहलू हैं जहाँ आप सच में चंगाई की चाहत रखते हैं और जिसकी ज़रूरत महसूस करते हैं?

२ क्या आप रुकावट महसूस करते हैं?

क्या आपकी ज़िंदगी में ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ आप किसी अजीब या असहज चीज़ का सामना कर रहे हैं, जबकि वही आपको चंगाई दे सकती है?

- वो मुश्किल बातचीत?
- सलाह-मशविरा का एक अपॉइंटमेंट?
- वो ज़िम्मेदारी वाला समूह जिसे आप टाल रहे हैं?
- वो इकरार जिससे आप डरते हैं?

३ आपके ईमान का अगला क़दम क्या है?

यीशु मसीह आपके अंदर क्या करने की कोशिश कर रहा हैं, चाहे अभी सब कुछ उलझा हुआ क्यों न लगे?

**पहला क़दम उठाना कभी आसान नहीं होता।
लेकिन आप अकेले नहीं हैं। आपसे बात करने, आपको सुनने और आपके लिए दुआ करने के लिए हमारे स्वयंसेवक हमेशा आपके साथ खड़े हैं।
मुफ़्त में और आप बिना नाम बताए, यहाँ बात कर सकते हैं?**

हर कोई आपके चमत्कार का जश्न नहीं मनाएगा।

जिस पल जन्म से उस अंधे इंसान की आँखें खुलीं और उसने पहली बार दुनिया को देखा, वह पल निश्चय ही अवर्णनीय ख़ुशी और विस्मय से भरा होगा। जिसने पूरी ज़िंदगी सिर्फ़ अंधेरा जाना था, उसने अचानक रोशनी को अपनी आँखों से महसूस किया। आप सोचेंगे कि जो लोग उसे बरसों से जानते थे, वे उसके साथ मिलकर आनंद मनाते, उसके चमत्कार पर हैरान होते, और ख़ुदा की महिमा करते।

लेकिन इसके बजाय, लोगों ने कहा:
"क्या यह वही आदमी नहीं है जो बैठकर भीख माँगता था?"
"नहीं,' कुछ लोगों ने कहा, ***'यह बस उसके जैसा दिखता है! यह मुमक़िन नहीं!"***

लोगों ने उस पर **शक़ किया।**
लोगों ने उसे **फ़िर नज़रअंदाज़ किया।**
लोगों ने उसे **बदनाम भी किया।**

क्यों? क्योंकि चमत्कार हमारी सोच के हदों को चुनौती देते हैं। वे हमें उस बात पर सवाल करने पर मजबूर करते हैं जिसे हम सच मानते आए थे।

उन्होंने पूछा, ***'तेरी आँखें कैसे खुल गई?'*** उस आदमी ने जवाब दिया ***"जिसे यीशु कहते हैं, उसने मिट्टी बनाई..."*** - यूहन्ना ९:११

बस इतना ही। **यीशु! मिट्टी! बनाई!**

यह दिखावा नहीं था। बिल्कुल तर्क और समझ के हिसाब से सही भी नहीं था। न ही किसी धार्मिक ढाँचे में सही बैठता था। लेकिन यह काम कर गया।

यूहन्ना ९ का बाकी हिस्सा लगभग ऐसा लगता है जैसे कोई मज़ाक चल रहा हो, उस आदमी से ऐसे सवाल-जवाब किए जाते हैं जैसे वो कोई मुजरिम हो। यहाँ तक कि उसके माता-पिता को भी घसीटकर लाया जाता है!

मगर वह अंधा बार-बार यही दोहराता गया...
***"एक बात मैं जानता हूँ: मैं अंधा था, लेकिन अब देख सकता हूँ।"* - यूहन्ना ९:२५**

उसने कोई बड़ी डिग्री हासिल नहीं की थी, न ही उसे सारे जवाब मालूम थे।
मगर उसके पास उसकी गवाही थी।
उसने ख़ुदा के सामर्थ को देखा था और उसी को मज़बूती से थामे रहा।

अगर वे आप पर यक़ीन न करें तो क्या करना चाहिए?

जैसे यूहन्ना ९ में उस अंधे आदमी के साथ हुआ, जिसे शिफ़ा मिली थी, वैसे ही जब आप अपनी ज़िंदगी में किसी चमत्कार का अनुभव करते हैं, तो हर कोई आपकी बात पर यक़ीन नहीं करेगा।

कुछ लोग उसे नज़रअंदाज़ कर देंगे। कुछ उस पर सवाल उठाएँगे। और कुछ लोग उस काम को छोटा साबित करने की कोशिश करेंगे जो ख़ुदा ने आपकी ज़िंदगी में किया है।

ऐसे पल दर्द दे सकते हैं, लेकिन याद रखे कि दूसरों का अविश्वास, आपके चमत्कार की सच्चाई को कम नहीं कर देता।

ऐसे समय में, कुछ बातें हैं जिन्हें आप थामे रख सकते हैं।

१ अपनी सच्चाई पर क़ायम रहें।

अपना अनुभव बयान करें।

आपकी कहानी सही और ताक़तवर भी हैं, चाहे दूसरे उसे पूरी तरह समझ न पाएं।

२ दिल पर न लें।

यह आप के बारे में नहीं है;

लोगों के लिए उस चीज़ को समझना मुश्किल होता है जिसका उन्होंने ख़ुद कभी अनुभव न किया हो।

३ रहमत दिखाएं।

विनम्रता और सब्र के साथ जवाब दें।

सवालों के लिए जगह दें, बिना इस दबाव के कि आपके पास हर बात का जवाब होना ज़रूरी है।

४ बदलाव को अपनाते रहें।

जिन हालातों से आप गुज़रें हैं, उनके लिए **आपकी ज़िंदगी ही सबसे बड़ी गवाही है।** लफ़्ज़ों से ज़्यादा, अपने काम और रवैये को बोलने दें।

५ सही समझ के लिए दुआ करें।

ख़ुदा से दुआ करें कि वह आपको ताक़त दे ताकि **आप दूसरों के शक़ को रहमदिली से संभाल सकें** और आपको समझदारी दे कि आप ग़ुस्से के बजाय मोहब्बत से जवाब दें।

८ भीड़ को खिलाना।

एक गाँव से दूसरे गाँव तक सफ़र करते हुए, यीशु मसीह पूरे इस्राएल में घुमा। अपने अल्फ़ाज़ों और कार्यों के ज़रिए, **उसने ख़ुदा की मोहब्बत को ज़ाहिर किया।** बीमारों को शिफ़ा दी, टूटे हुए दिलों को दिलासा दिया, और बेचैन आत्माओं को सुकून पहुँचाया। उसकी मौजूदगी में लोग महज़ चमत्कार ही नहीं देखते थे, बल्कि पहली बार ख़ुद को सचमुच देखा हुआ, सुना हुआ महसूस करते थे, यहाँ तक कि अपने सबसे मुश्क़िल हालातों के बीच भी।

एक लंबे दिन के बाद, चेलें बहुत थक जाते हैं। हर तरफ़ से भीड़ उन पर टूट पड़ी थी, ऐसे लोग जो उम्मीद के भूखे और शिफ़ा के लिए बेताब थे। **चेलों की आँखों में थकान देखकर,** यीशु मसीह उन्हें नर्मी से अपने पास बुलाकर कहता हैं:

> ***"हम लोगों से अलग होकर किसी तन्हा जगह जाकर आराम करेंगे।"***
> **मरक़ुस ६:३१**

वे एक नाव में बैठकर, तन्हाई की तरफ़ बढ़ते हुए, किनारे से दूर निकल जाते हैं। धूप में पानी चमक रहा था और एक पल के लिए लगा कि उन्हें आख़िर में कुछ सुकून मिल गया था। **पर वह माहौल जल्दी ही बदल गया था।**

ख़बर फ़ैल चुकी थी। जैसे ही उनकी नाव दूसरी ओर पहुँची, **लोग बेताबी से यीशु मसीह तक पहुँचने के लिए, उनकी तरफ़ दौड़ रहे थे।**

जब यीशु मसीह ने उस भीड़ को देखा, तब **उसका दिल उनके लिए रहम से भर गया।** वह भीड़ ऐसी थी जैसे चरवाहे के बिना भेड़ें: **भटकी हुई, घायल और भूखी।**

यीशु मसीह ख़ुशी से उनका स्वागत करता हैं और उन्हें बहुत सी बातें सिखाना शुरू करता हैं। वो पुनर्स्थापन और उम्मीद की बातें करता हैं और इस दौरान सूरज आहिस्ता-आहिस्ता ढलने लगता है और लोग उसके हर लफ़्ज़ को ग़ौर से सुनते हैं।

आख़िरकार, चेलें उसके पास आते हैं, उनके चेहरों पर फ़िक्र साफ़ दिखाई दे रही थी। वे एक वीरान जगह में थे, चारों तरफ़ हज़ारों लोग थे, जिनके पेट भूख से मचल रहे थे। जल्द ही शाम होने वाली थी।

> ***"उन्होंने कहा, 'यह जगह सुनसान है, और बहुत देर हो चुकी है। लोगों को जाने दें, ताकि वे आस-पास के इलाक़े और गाँवों में जाकर अपने लिए कुछ खाने को ख़रीद सकें।'"***
>
> **मरकुस ६:३५-३६**

मगर यीशु मसीह उनकी तरफ़ मुड़कर एक चौंका देने वाला जवाब देता हैं:
"उन्हें कुछ खाने के लिए दो।" मरकुस ६:३७

उनकी आँखों में **हैरानी और उलझन साफ़ दिखाई दे रही थी। उनके हाथ में बस पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ थीं।** इतने कम खाने से पाँच हज़ार आदमियों और उनके अलावा महिलाओं और बच्चों को कैसे खिलाया जा सकता था?

चेलों की नज़र में, जो कुछ उनके पास था, वह बेहद मामूली, कम और लगभग बेकार था। लेकिन यीशु मसीह ने उनसे वही थोड़ी सी चीज़ अपने पास लाने को कहा।

फ़िर यीशु ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को अपने हाथों में लिया, आसमान की ओर देखा, शुक्र अदा किया, और रोटी तोड़कर अपने चेलों को देने लगा। और वहीं, उसी साधारण से पल में, एक असाधारण चमत्कार ज़ाहिर होने लगा।

चेले भोजन लेकर भीड़ के बीच जाते रहे, और हर बार जब वे यीशु के पास लौटते, उनके हाथों के लिए और भोजन मौजूद होता। धीरे-धीरे वह थोड़ा सा खाना एक महान दावत में बदल गया। लोग खाते गए, और भोजन ख़त्म नहीं हुआ। चेले बाँटते ही गए, यहाँ तक कि हर कोई भरपेट खाता है और जब सब खा चुके थे, तब भी बारह टोकरियाँ भोजन की बची हुई थीं।

जो शुरुआत में बहुत कम था, वही यीशु के हाथों से भरपूरी में बदल गया। आख़िर में, शुरुआत से भी ज़्यादा बचा था।

इस कहानी को यहाँ देखें

ज़िंदगी के लिए सबक़:

- **आपके हाथ में जो भी है, चाहे वो छोटा या मामूली ही क्यों न हो,** जब आप उसे ख़ुदा के हवाले कर देते हैं, तब वह उसे बढ़ाता है और असरदार बनाता है।
- **उदारता से देना अहम है।** देने के छोटे-छोटे चीज़ें, चाहे वो वक़्त हो, हुनर हो या साधन, फ़र्क़ ला सकते हैं।
- **भरोसा और फ़रमांबरदारी बहुत ज़रूरी हैं।** चेलों को यह नहीं पता था कि यीशु मसीह भीड़ को कैसे खिलाएँगा, लेकिन उन्होंने उसके आदेश को माना। काम नामुमकिन था, लेकिन उनकी फ़रमांबरदारी ने चमत्कार का रास्ता खोल दिया।
- **ख़ुदा भरपूरी से अता करता है।** उसने सिर्फ़ काफ़ी खाना ही नहीं दिया, बल्कि उससे भी ज़्यादा, क्योंकि बारह टोकरियाँ बच गई। उसका इंतज़ाम अक्सर हमारी उम्मीद और सोच से कई बढ़कर होता है।

सवाल:

१ आपके पास 'रोटियाँ और मछलियाँ' के रूप में क्या हैं?

आपकी ज़िंदगी में ऐसी कौन-सी चीज़ें हैं? हुनर, वक़्त, या साधन जो आपको छोटी या मामूली सी लगती हैं?

२ आप दूसरों के लिए बरक़त का रास्ता कैसे बन सकते हैं?

आपके पास जो पहले से है, उसे इस्तेमाल करके दूसरों के लिए कैसे बरक़त बना सकते है?

३ क्या आप बाटने के लिए राज़ी हैं?

क्या आप अपने पास मौजूद थोड़ी सी चीज़ को भी ख़ुदा के हवाले करने के लिए राज़ी हैं? इस यक़ीन के साथ कि वह उसे आपकी सोच से कहीं ज़्यादा बढ़ा सकता है?

आपकी ज़िंदगी चमत्कारों से सजी हुई हैं।

यहाँ एक पल ठहरकर गहराई से ग़ौर करें।
जैसा कि हमने शुरुआत में कहा था, शायद आप इस सफ़र पर इसलिए आए हैं क्योंकि आपके दिल में किसी चीज़ की तलाश है। शायद आप उम्मीद खोज रहे हैं। शायद शिफ़ा। शायद सुकून। या शायद अपनी ज़िंदगी में किसी ऐसे बदलाव का इंतज़ार कर रहे हैं जो सब कुछ नया कर दे।

हमारी सच्ची दुआ है कि आप अपनी ही कहानी में ख़ुदा के चमत्कारों को प्रकट होते देखें, सिर्फ़ बड़े और असाधारण तरीक़ों में ही नहीं, बल्कि उन ख़ामोश और साधारण पलों में भी जहाँ उसकी मौजूदगी सबसे गहराई से महसूस होती है।

अगर आप चाहें, तो इस दुआ में हमारे साथ शामिल हो सकते हैं, या अपने दिल के अल्फ़ाज़ों में ख़ुदा से बात कर सकते हैं। उससे कहे कि वह आपके दिल को अपनी मौजूदगी से भर दे और आपकी आँखें खोल दे, ताकि आप उसे और क़रीब से जान सकें।

"ऐ आसमानी पिता,
तेरी सामर्थ, तेरी परवाह और तेरी बेशुमार मोहब्बत के लिए तेरा शुक्रिया।
मेरी मदद कर कि मैं तुझ पर भरोसा करना सीखूँ, ईमान में आगे बढ़ूँ,
और अपनी ज़िंदगी में तेरे चमत्कारों को पहचान सकूँ, चाहे वे बड़े हों या छोटे।
मेरी आँखें खोल दे, ताकि मैं तेरे अद्भुत कामों को देख सकूँ,
और मुझे हिम्मत दे कि मैं तेरी कहानी का हिस्सा बन सकूँ।
यीशु मसीह के नाम में, आमीन।"

हमारे रोज़ाना चमत्कार के प्रोत्साहनों के ज़रिए,
ख़ुदा के चमत्कारों के समर्थ को अनुभव करें:

६ पानी पर चलना।

यीशु मसीह ने अभी-अभी पाँच रोटियों और दो मछलियों से पाँच हज़ार से ज़्यादा लोगों को खिलाया था। इतने बड़े चमत्कार के बाद, उसने अपने चेलों को नाव में आगे भेज दिया, जबकि वो ख़ुद दुआ करने के लिए पहाड़ पर गया (मत्ती १४:२७)।

अब चेलें नाव में, समुंदर के बीच, तेज़ हवा और उठती लहरों से जूझते हुए, थके हुए और बेचैन थे। हौले हौले, सूरज ढ़लने लगता है और तूफ़ान और भी तेज़ हो जाता है। जब वे डर, अविश्वास और कमज़ोरी से घिरे हुए थे, तब उसी तूफ़ान के बीच, **यीशु मसीह पानी पर चलते हुए उनकी तरफ़ आता हैं**। यह देखकर वे सब और भी डर गए, यह सोचकर कि शायद कोई भूत देख लिया हो।

> *लेकिन यीशु ने फ़ौरन उनसे कहा, "हौसला रखो! मैं ही हूँ। डरो मत।"*
>
> **मत्ती १४:२७**

पतरस, जो हमेशा दिलेर और जल्दबाज़ था, जवाब देता है:

> ***"“ऐ ख़ुदावंद, अगर तू ही है, तो मुझे हुक़्म दे कि मैं पानी पर चलकर तेरे पास आऊँ।”"***

यीशु उसे बुलाता है। पतरस, नाव से बाहर क़दम रखता है और उसी पल में नामुमक़िन काम, मुमक़िन में बदलता है। **वह पानी पर चलते हुए, यीशु मसीह की तरफ़ बढ़ता है!** सोचिए उसकी ख़ुशी और डर, वो एहसास कि वह कुछ ऐसा कर रहा है जो किसी और ने करने की हिम्मत नहीं की।

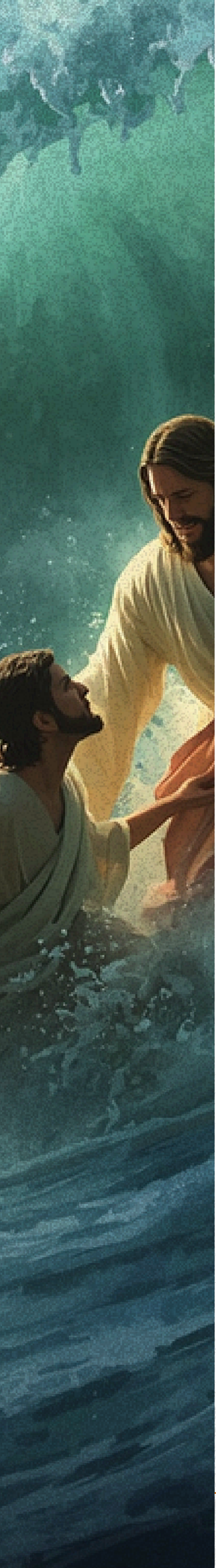

लेकिन जब पतरस, हवा और लहरों पर अपनी नज़र लगाता है, तब ख़ौफ़ उसके दिल में घर करने लगता है और वह डूबने लगता है।

'जब उसने तूफ़ान को देखा, तब वह डर गया और डूबने लगा, और ज़ोर से फ़रियाद करने लगा, "ऐ ख़ुदावंद, मुझे बचा!"' **मत्ती १४:३०**

यह पल एक गहरी सच्चाई को उजागर करता है: **अक्सर चमत्कार, ईमान और डर के बीच चल रही कशमकश में जन्म लेता हैं।**
जब आप हिम्मत के साथ आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं, तब डर आपकी नज़र उस सामर्थ से हटा देता है जो मुमकिन को जन्म दे सकती है। लेकिन ठीक उसी पल, जब इंसानी कमज़ोरी सामने आती है, यीशु मसीह अपना हाथ बढ़ाकर संभाल लेता है। **पतरस डूबने लगा, मगर यीशु ने उसे गिरने नहीं दिया।**:

"'फ़ौरन यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया और कहा, "ऐ कम ईमान वाले, तू शक़ में क्यों पड़ गया?"' **मत्ती १४:३१**

यीशु मसीह ख़ामोश था, डटा हुआ था और क़ाबू में था। वह पतरस को सख़्ती से नहीं डाँटता है; बस उसे यक़ीन करने के लिए बुलाता है। उस तेज़ तूफ़ान में भी पतरस, यीशु मसीह के साथ महफ़ूज़ था।

चेलों का जवाब...
जब वे दोनों नाव में वापस आते हैं, तो तूफ़ान तुरंत थम जाता है और चेले यीशु मसीह की इबादत करते हैं:

"'जब वे नाव में चढ़ गए, तब हवा थम गई। तब नाव में जो थे, उन्होंने यीशु मसीह की इबादत की और कहा, "यक़ीनन तू ख़ुदा का बेटा है।"' **मत्ती १४:३२-३३**

उन्होंने यह अद्भुत चमत्कार देखा, ईमान की आज़माइश देखी और आज़ादी को महसूस किया। उनका नज़रिया डर से अब शुक्रगुज़ारी में बदल गया।

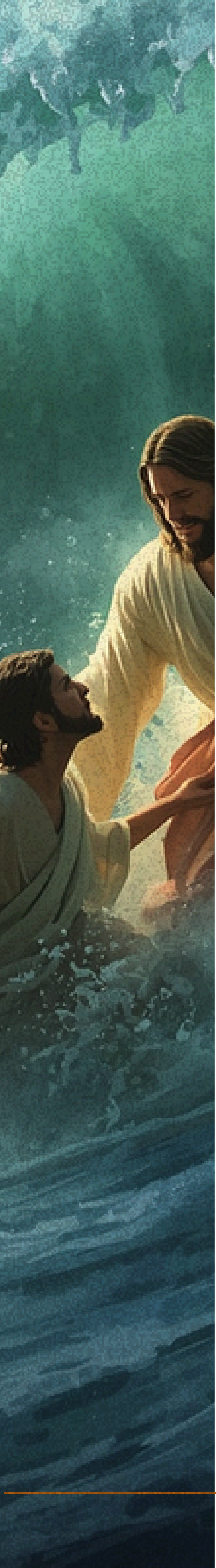

ज़िंदगी के लिए सबक़:

- **चमत्कारों के लिए हिम्मत की ज़रूरत होती है।** पतरस डर के बावजूद नाव से बाहर क़दम रखता है। चमत्कार अक्सर आपको दिलेरी से क़दम उठाने के लिए न्योता देते हैं, चाहे अंजाम साफ़ न दिखे।
- **नज़र मायने रखता है।** जब तक पतरस की नज़र यीशु मसीह पर थी, वह पानी पर चलता रहा; लेकिन जब उसने तूफ़ान की ओर देखा, तब वो डूबने लगा। हालात के नतीजे, आपकी नज़र पर निर्भर होते है।
- **मदद क़रीब है।** जब आप लड़खड़ाने लगते हैं, तब भी बचाव मौजूद होता है। आप अपनी मुश्किलों में अकेले नहीं हैं।
- **ईमान और शक अक्सर साथ-साथ चलते हैं।** ईमान के साथ आगे बढ़ते हुए डर महसूस होना इंसानी फ़ितरत है। अहम बात यह है कि नज़र उसी पर बनी रहे जो बचा सकता है।

सवाल:

१ आज आप किस ‘तूफ़ान’ से घिरे हुए हैं?

आज आपकी ज़िंदगी में ऐसे कौनसे हालात हैं, जहाँ आप जूझ रहे हैं, अकेलापन महसूस कर रहे हैं, या दबाव में हैं?

२ क्या आप अपनी सोच को बदल सकते हैं?

आप कैसे अपने ध्यान को डर से उम्मीद की तरफ़ और मुश्किलों से मुमक़िन रास्तों की तरफ़ मोड़ सकते हैं?

३ क्या आप एक दिलेर क़दम के लिए तैयार हैं?

क्या आप नाव से बाहर क़दम रखने की हिम्मत रखते हैं? कहाँ आज ख़ुदा आपको बुला रहा है कि आप एक हिम्मत भरा क़दम उठाएँ, चाहे वह नामुमक़िन ही क्यों न लगे?

चमत्कार हर दिन

क्या ये चमत्कारों की कहानियों को पढ़कर आपको हौसला मिला है और आपका ईमान बड़ा है? क्या आप अपनी ज़िंदगी में ख़ुदा की मौजूदगी और उसके अज़ीम चमत्कारों को देखना चाहेंगे?

तो आप रोज़ाना हमारे 'चमत्कार हर दिन' के प्रोत्साहन से जुड़ सकते है। आपको, हमारी तरफ़ से हर सुबह अपने इनबॉक्स में एक छोटा सा हौसला देने वाला प्रोत्साहन का पैग़ाम मिलेगा।
उसमे एक आयत, एक चिंतन और एक दुआ शामिल होगी जिससे आपको हर दिन की बातों में भी कुछ ख़ास देखने में मदद होगी और उस बदलाव के लिए लगातार दुआ करते रहने में साथ देगी, जिसकी आप अपनी ज़िंदगी में आस रखते हैं।

GET IT ON Google Play

आज ही हमारे साथ जुड़ जाएँ और ख़ुदा को हर दिन अपनी भलाई से आपको चकित करने दें।

Download on the App Store

हाँ, मुझे 'चमत्कार हर दिन' के सफ़र में शामिल करे!

अब आइए, आख़री हिस्से की तरफ़ बढ़ते हैं।

छे चमत्कार, एक ख़ुदा।

१. कर्ज़ में डूबी एक विधवा:

ख़ुदा ने थोड़े से तेल को बढ़ाकर एक ज़रूरतमंद परिवार की मदद की।

२. लाल समुंदर का दो हिस्सों में बट जाना:

ख़ुदा ने वहाँ रास्ता बनाया जहाँ कोई रास्ता नहीं था और अपने लोगों को ख़तरे से बचाया।

३. शेरों की गुफ़ा में दानिय्येल:

ख़ुदा ने जानलेवा हालात में, दानिय्येल की हिफ़ाज़त की, यह दिखाते हुए कि वफ़ादारी और सच्चाई मायने रखती हैं।

४. जन्म से अंधा इंसान:

यीशु मसीह ने उसकी आँखें खोल दीं, यह दिखाते हुए कि जो कमी लगती है, वही बदलाव का ज़रिया बन सकती है।

५. पाँच हज़ार लोगों को खिलाना:

यीशु ने रोटी और मछलियों को बढ़ाया, यह दिखाते हुए कि ख़ुदा परवाह करता है और हर ज़रूरत पूरी करता है।

६. पानी पर चलना:

पतरस ने ईमान से क़दम बढ़ाया, यह याद दिलाते हुए कि चमत्कार के लिए हिम्मत और सही नज़र ज़रूरी है।

इन सब कहानियों में एक आम बात है: **ये सब एक ऐसे ख़ुदा की तरफ़ इशारा करती हैं जो हम पर हमेशा अपनी नज़रें टिकाए रखता है, हमारी परवाह करता है और आम ज़िंदगी में भी ग़ैर-मामूली तरीक़ों से काम करता है।** ये चमत्कार आज भी हमें भरोसा, फ़रमांबरदारी, हिम्मत, दरियादिली और उम्मीद के बारे में सिखाते हैं।

हर कहानी यह ज़ाहिर करती है कि हम ख़ुदा की ताक़त, परवाह और मोहब्बत को अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भी काम करते देख सकते है।

क्या आप आख़री सवालों के लिए तैयार हैं?

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

इन सवालों पर ग़ौर करें। इन्हें अपनी रहनुमाई करने दें, और यह समझाने की कोशिश करें कि ईमान, भरोसा और हिम्मत आपकी ज़िंदगी में क्या किरदार निभा सकते हैं।

याद रखें, चमत्कार सिर्फ़ गुज़रे वक़्त की कहानियाँ नहीं हैं। वे आज भी होते है।

१ **इन ६ चमत्कारों में से कौन सा चमत्कार, सबसे ज़्यादा आपके दिल को छू गया है और क्यों?**

२ **इन कहानियों के ज़रिए आपने ईमान, भरोसा और उम्मीद के बारे में क्या सीखा?**

३ **आपकी ज़िंदगी में कहाँ आपने पहले से ही ख़ुदा को, छोटे या बड़े चमत्कारों के ज़रिए काम करते हुए देखा है?**

४ **आप कौनसा क़दम उठा सकते है, ताकि ज़िंदगी में ख़ुदा की रहनुमाई और उसके मुमक़िन रास्तों के लिए आप और खुले-दिल रह सके?**

५ **आप इन चमत्कारों से सीखे गए सबक़ को कैसे इस्तेमाल करके दूसरों को हौसला दे सकते है, उनकी मदद और उन्हें प्रेरित कर सकते है?**

खुलकर बात करें। दिलेर बनें। अपने आस-पास के मौकों को पहचानें और **सबसे बढ़कर, इस बात पर भरोसा रखें कि ख़ुदा आज भी आपकी ज़िंदगी में काम कर रहा है, और वह नामुमक़िन को मुमक़िन करने के लिए हाज़िर है।**

ख़ुदा आपको बरक़त दे! आप एक चमत्कार है।

‘चमत्कार हर दिन’ से रोज़ाना हौसला अफ़ज़ाई के पैग़ाम पाने के लिए,

आज ही ॲप डाउनलोड करें!

GET IT ON Google Play

Download on the App Store

क्या आपके पास कोई सवाल है?

बेझिझक हमे संपर्क करें, हम आपकी मदद के लिए यहाँ हाज़िर हैं।

हमसे ज़रूर बात करें!